भारतीय मजदूर संघ

अध्यक्षीय उद्‌बोधन

भारतीय मजदूर संघ
केंद्रीय कार्यालय :
रामनरेश भवन, तिलक गली
पहाड़गंज, दिल्ली–110055
दूरभाष : 011–23562654, 23584212
फैक्स : 91–11–23582648

हसुभाई दवे

राष्ट्रीय अध्यक्ष

ग्राम राम परदा जि. सुरेन्द्र नगर (गुजरात) १६ जुलाई १६३६ को जन्मे श्री हसुभई दवे (हसमुख भाई गौरीशंकर दवे) वाणिज्य व विधि स्नातक और पेशे से वकील हैं। गुजरात विशेषकर राजकोट (स्थाई निवास) में अनेक समाजिक, वित्तिय व सांस्कृतिक संगठनों न्यासों व परिषदों के अध्यक्ष या महामंत्री दायित्व का आप ने सफलता पूर्वक निर्वाह किया है। राजकोट नगर निगम में पार्षद व लेबर ला प्रैक्टीशनर संघ के अध्यक्ष के नाते आप का योगदान सराहनीय रहा है। मृदु व मितभाषी श्री दवे अपनी शालीनता, कार्य कुशलता तथा मौलिक चिंतन के लिए विख्यात हैं।

गुजरात प्रदेश भा.म.संघ के आप संस्थापक सदस्य और १२ वर्ष प्रदेश महामंत्री व ३ वर्ष प्रदेश कार्याध्यक्ष का दायित्व संभाल चुके हैं। अखिल भारतीय वित्त तथा महामंत्री कार्य का भी आपने योग्य रीति से संचालन किया है। अनेक सरकारी व गैर सरकारी समितियों बोर्ड़ों में अपने कौशल्य का परिचय देते हुए श्रमिकों का नेतृत्व किया है। केन्द्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड (भारत सरकार) के चेयरमैन आप रह चुके हैं। द्वितीय राष्ट्रीय श्रम आयोग के सदस्य तथा वर्तमान में स्थायी श्रम समिति (श्रम मंत्रालय) के आप उपाध्यक्ष और केन्द्रीय भविष्य निधि बोर्ड के सदस्य हैं।

अर्न्तराष्ट्रीय श्रम संगठन (आई एल ओ) की वार्षिक कान्फ्रेंस वर्ष २००४ जिनेवा में आप ने भारतीय श्रमिक मंडल का सफल नेतृत्व कर यश अर्जित किया है। चीन मलेशिया, हांगकांग व थाईलैण्ड आदि देशों में श्रमिक प्रतिनिधि मंडलों का नेतृत्व कर के आप ने भारतीय मज़दूर संघ के काम और नाम को आगे बढ़ाया है।

अध्यक्षीय भाषण

सम्मानीय श्री के चन्द्रशेखर राव जी, श्रम मंत्री, भारत सरकार, श्री उदय पटवर्धन – महामंत्री, भारतीय मज़दूर संघ, श्री सुरेश राव केतकर, अधिकारी गण तथा प्रतिनिधि भाइयों, बहनों एवं आमंत्रित सज्जनों।

आज हम **भारतीय मज़दूर संघ** के चौदहवें त्रिवार्षिक अधिवेशन में यहाँ एकत्रित हुए हैं। दिल्ली शहर भारत देश की राजधानी एवं ऐतिहासिक नगरी है। आज़ादी की लड़ाई के अनेक प्रसंग इस भूमि पर हुए हैं। इस स्थान पर मिलकर सभी को आनंद और संवेदना की अनुभूति होना स्वाभाविक है।

इसके पूर्व जब २००२ में हम त्रिवेन्द्रम में मिले थे, तब हमने संकल्प किया था कि वर्ष २००५ में **भारतीय मज़दूर संघ** की स्थापना के ५०वें वर्ष में स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में दिल्ली में पुनः मुलाक़ात होगी, इस कारण से आज इस अधिवेशन का महत्व और अधिक हो गया है।

आज इस अधिवेशन में हम एक व्यक्ति की कमी को महसूस कर रहे हैं। आज हम **स्व० दत्तोपंत जी** को मंच पर साक्षात् रूप में देखने में असमर्थ हैं किंतु उनके चित्र एवं उनके नाम पर रखे गए इस अधिवेशन परिसर के नाम से हम उनकी यादें ताजा कर रहे हैं।

आज मेरे मन में विचार आ रहा है कि इस स्वर्ण जयंती अधिवेशन के समय यदि स्वर्गीय दत्तोपंत जी जीवित होते तो शून्य

से विराट् के रूप में सृजित किए गए **भारतीय मज़दूर संघ** को, जो कि आज भारत का सबसे बड़ा श्रम संघ है, को आज वे देख पाते। परंतु ईश्वर की इच्छा से वे आज हमारे बीच में नहीं हैं, वे हमें छोड़कर चले गए।

कार्य में अच्छे और बुरे प्रसंग तो आते ही हैं, ध्येय मार्ग हमेशा कंटकमय ही होता है। दैनिक गति – विधियों में हम इस बात का सतत अनुभव करते रहते हैं। काँटे की चुभन से घबराकर और पैर से निकलते रक्त को देखकर यदि हम उदास और हताश हो जायें तो यह ध्येय मार्ग के पथिक का लक्षण नहीं है। कर्तव्य पथ पर अटल रहें, अविचल दृढ़ता से आगे ही बढ़ते रहें, यही ध्येय मार्ग के पथिक का लक्षण है।

परम पूज्य डा० हेड्गेवार जी ने कहा है कि संगठन राष्ट्र की प्रमुख शक्ति है। जगत की कोई भी समस्या हल करनी हो तो वह इस संगठन की शक्ति के आधार पर ही हो सकती है। शक्ति हीन राष्ट्र की कोई भी आकांक्षा कभी भी सफल नहीं हो सकती। परंतु सामर्थ्यशाली राष्ट्र कोई भी काम, जब चाहे तब अपनी इच्छानुसार कर सकते हैं।

इसी प्रकार **प० पू० गुरूजी** ने कहा है कि कार्यकर्ता को तोप के गोले की तरह होना चाहिए। जो कि बिना शंका के निर्भय होकर चारों ओर शत्रुओं का विध्वंस करने वाला, परंतु स्वयं के शरीर का क्या होगा, इसकी परवाह न करने वाला होना चाहिए। इस वीर व्रत की नित्य उपासना के लिए आजीवन, अहर्निश उत्कृष्ठ निष्ठा होनी आवश्यक है। अपने संगठन और उसकी कार्यपद्धति में इस प्रकार की असंदिग्ध निष्ठा होनी चाहिए कि इस मार्ग से ही राष्ट्र का उत्थान होगा।

स्वर्गस्थ दत्तोपंत जी जन्मजात राष्ट्र भक्त होने से देश के लिए जिये, अपने लिए नहीं। इन्होंने लोगों को संगठित कर उनका ध्येयानुकूल जीवन बनाया और छोटी छोटी बातों की चिंता की।

हम सब भारत माता को परम वैभव की स्थिति तक ले जाने की इच्छा रखते हैं। इसके लिए हमें कुछ तो त्याग करना ही पड़ेगा। आइये, अपने आप को राष्ट्र जीवन में समरस करके एक महान राष्ट्र का साक्षात्कार करें, यही **स्वर्गीय दत्तोपंत जी** को स्मरणांजलि होगी। इस हक़ीक़त को हम काम करते समय हमेशा याद रखें।

भारतीय मज़दूर संघ का इतिहास इस स्वर्ण जयंती के समय यदि याद करें तो ज़्यादा अच्छा रहेगा। **भारतीय मज़दूर संघ** की शुरुआत शून्य से हुई है। उस समय की जो परिस्थिति थी, उससे हम लोग अनभिज्ञ नहीं हैं और कैसी गंभीर परिस्थिति से निकलकर धीरे धीरे **भारतीय मज़दूर संघ** की प्रगति हुई, यह हक़ीक़त हमारे पुराने कार्यकर्ता अच्छी तरह से जानते हैं। **२३ जुलाई १९५५ से भारतीय मज़दूर संघ की शुरुआत हुई** और **भारतीय मज़दूर संघ** देश का सर्वश्रेष्ठ मज़दूर संगठन है। स्वाभाविक रूप से ऐसे समय कार्यकर्ता के मन में अहंकार निर्माण हो और कोई एक व्यक्ति या तो वर्तमान पदाधिकारी यश लेने का प्रयास करे, तो यह योग्य नहीं होगा, क्योंकि यह शून्य से विराट् तक पहुँचने का एक सामूहिक प्रयास है।

इसके लिए मुझे दो प्रसंग याद आ रहे हैं।

१. वर्ष १९८४ में **भारतीय मज़दूर संघ** का अखिल भारतीय अभ्यास वर्ग इन्दौर में था, तब **स्वर्गस्थ दत्तोपंत जी** ने भारतीय मज़दूर संघ में काम करते करते शहीद हुए और

भारतीय मज़दूर संघ के काम के लिए जिन लोगों ने बलिदान दिए हैं ऐसे कार्यकर्ताओं को याद करने के लिए एक विशेष सत्र (Rollcall) आयोजित किया, यह हम सबको याद है। जब यह विषय सभी कार्यकर्ताओं के सामने रखने का प्रस्ताव रखा तब सबके मन में ऐसा लगा कि यह विषय बहुत समय तक नहीं चलेगा परंतु जब एक के बाद एक कार्यकर्ता मंच पर आने लगे और वर्णन करते गए तब सबको पता लगा कि हज़ारों कार्यकर्ताओं ने बलिदान देकर इस कार्य की प्रगति में योगदान दिया है। यह सत्र १ घंटा और २० मिनट चला। इस से वर्तमान कार्यकर्ता को ध्यान में आया कि हमें इसमें यश लेने की आवश्यकता नहीं है और किसी एक व्यक्ति को अहंकार करने की ज़रूरत नहीं है। उनका स्पष्ट विचार ध्यान में आता है।

२. एक बार मैं **स्वर्गस्थ दत्तोपंत जी** के घर साउथ एवेन्यू में उनसे मिलने के लिए गया था, तब **भारतीय मज़दूर संघ** अन्य श्रम संगठनों से ज़्यादा सदस्य संख्या वाला संगठन है ऐसी अस्थायी घोषणा केन्द्र सरकार ने की थी। चर्चा के दौरान केन्द्र सरकार के केन्द्रीय मंत्री श्री मुरली मनोहर जोशी **स्वर्गस्थ दत्तोपंज जी** से मिलने वहाँ आये। तब **ठेंगडीजी** ने मेरा परिचय जोशी जी से करवाते हुए कहा कि **भारतीय मज़दूर संघ** नंबर एक के हमारे महामंत्री **श्री हसुभाई दवे** जी हैं। इस समय मनुष्य स्वभाव के अनुरूप व्यक्ति के मन में स्वाभाविक रूप से अहंकार की भावना उत्पन्न हो सकती है अथवा मेरे समय में भारतीय मज़दूर संघ एक नंबर पर आया, ऐसी भावना उत्पन्न हो सकती है, परंतु वास्तव में पहले बताये अनुसार **भारतीय मज़दूर संघ**

कोई व्यक्ति निष्ठ संगठन न होने के कारण कार्य की प्रगति सामूहिक प्रयासों से होती है और १९८४ का इंदौर का उदाहरण सामने होने से ऐसे प्रसंग में व्यक्ति को यश न लेते हुए, यश के भागीदार अन्य कार्यकर्त्ता हैं यह बात हमेशा याद रखनी चाहिए। व्यक्ति का परिचय संगठन के कारण है। संगठन में से व्यक्ति जो अहंकार के कारण अपने आपको अलग समझे तो व्यक्ति की पहचान स्वाभाविक तरीके से नष्ट होती है। संगठन महान है, व्यक्ति नहीं। सामूहिक प्रयास में अहंकार एवं व्यक्ति का स्थान नहीं है, यह बात हमेशा याद रखनी चाहिए। संगठन से ही व्यक्ति की पहचान होती है, शेष मूल्य रहित है।

इस बारे मे मुझे एक प्रसंग याद आता है :–

अंगीरा ऋषि के शिष्य उदयन बहुत प्रतिभाशाली थे, परंतु उनको यह अहंकार आ गया था कि मैं अकेला ही काफ़ी हूँ, मुझे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं। ऋषि ने यह सोचा कि इसकी ग़लत फ़हमी दूर करने के लिए कोई रास्ता निकालना होगा।

ठंड के दिन थे। रात्रि के समय सत्संग चल रहा था, बीच में एक पात्र में जलता हुआ अलाव रखा था। ऋषि ने कहा कितनी सुंदर अग्नि है, इसकी सुंदरता का श्रेय सभी कोयले के टुकड़ों को मिलेगा ना ? सभी ने हाँ कहा।

ऋषि ने कहा कि पात्र में जो एक दो बड़े आकार के जलते हुए कोयले हैं उन्हें निकाल कर मेरे पास रख दो, मैं उनकी गर्मी का लाभ लूंगा।

चिमटे से पकड़कर तेज जलते अंगारों को ऋषि के पास रखा गया। सत्संग आगे चला। परंतु थोड़ी देर बाद बाहर निकाल कर रखे गए अंगारे बुझ गए और उन पर राख की परत चढ़ गई।

ऋषि ने कहा, आप भले ही कितने भी तेजस्वी हों, परंतु इन कोयलों की तरह भूल मत करना। जब तक ये पात्र में थे, तब तक सबसे अधिक तेजस्वी बनकर चमक रहे थे, और अंत तक सुलग कर सभी को गर्मी दे रहे होते, परंतु बाहर निकल गए इसलिए बुझ गए। प्रतिभा का भी ऐसा ही होता है। संयुक्त प्रयासों द्वारा अधिक अच्छी प्रगति हो सकती है।

ऋषि परंपरा के अनुसार व्यक्तिगत हित को एक ओर रखकर समाज के हित के लिए प्रतिभा का उपयोग करना, यही श्रेष्ठ है।

उदयन को अलग से समझाने की ज़रूरत नहीं पड़ी। भारतीय मज़दूर संघ के कार्यकर्ता के लिए यह एक श्रेष्ठ उदाहरण है। अलग उदाहरण से समझाने की आवश्यकता नहीं।

आज की परिस्थिति और आह्वान :

वर्तमान की प्रतिस्पर्धा के दौर में औद्योगिक विकास हेतु विचार धारा के स्थान पर नये व्यापक दृष्टिकोण को अपनाने की आवश्यकता है। औद्योगिक शांति बनी रहे इसके लिए आवश्यक है कि संघर्ष की जगह सहयोग की नीति अपनायी जाये।

उद्योग में संघर्ष के बदले सहयोग का माहौल खड़ा करने के लिए प्रबंधन और श्रमिकों को एक दूसरे की भूमिका को समझने की आवश्यकता है। इसके लिए दोनों को अपने पूर्वाग्रहों को

छोड़कर रचनात्मक रास्ते पर चलने की आवश्यकता है। यदि किसी उद्योग में श्रमिक और प्रबंधन अपनी अपनी भूमिका को निभाने में सफल होते हैं तो उद्योग वर्तमान स्पर्धा में टिक सकता है क्योंकि आज उद्योगों के सामने अपना अस्तित्व बनाये रखना ही सबसे बड़ी चुनौती है।

वैश्वीकरण के विश्व पर पड़ने वाले प्रभावों को समझने के बाद यदि हम भारत के संदर्भ में इस विषय पर चर्चा करें, तो बहुराष्ट्रीय कंपनियों के अंधाधुंध प्रवेश के कारण १९९१ में अपनाई गई। नई औद्योगिक एवं आर्थिक नीति के परिणाम स्वरूप भारत में अब तक लगभग पांच लाख औद्योगिक ईकाइयां बंद हो चुकी हैं एवं उसमें कार्यरत दस करोड़ से ज़्यादा लोग अलग अलग रूप से अपना रोज़गार खो चुके हैं। इक्कीसवीं सदी में ये स्पष्ट रूप से सिद्ध हो चुका है कि जो सबसे अधिक परिवर्तनशील होगा वही अपने अस्तित्व को बचाये रख सकेगा अर्थात् सर्वाइवल ओफ़ दि फ़िटेस्ट।

औद्योगिक शांति के साथ में ही उद्योग और श्रमिक का हित जुड़ा है। इसलिए ज़रूरी है कि श्रमिकों के हित के लिए श्रमिक संघ की स्पष्ट एवं रचनात्मक नीति हो। हर श्रमिक को यूनियन एवं यूनियन को श्रमिक के प्रति अपनी अपनी भूमिका को समझने एवं रचनात्मक कार्यपद्धति अपनाने की आवश्यकता है। इस हेतु हम वर्षों से यह कहते आ रहे हैं कि 'राष्ट्र हित सर्व प्रथम' किंतु राष्ट्र हित का अस्तित्व अन्य आयामों से भी जुड़ा है। आज के युग में 'राष्ट्र हित, उद्योग हित एवं श्रमिक हित' इन तीनों को साथ लेकर चलना होगा।

आद्यौगिक जगत के इतिहास में श्रमिकों को सदा ही अपने हितों के लिए संघर्ष करना पड़ा है एवं संघर्ष किए बिना उसे न्याय

नहीं मिला है। मौलिक माँगों एवं अधिकारों के लिए श्रमिकों को संघर्ष का रास्ता अपनाना पड़ा है। लेकिन अब समय बदल गया है, परिस्थितियों में बदलाव आने से श्रमिक एवं प्रबंधन की भूमिका भी स्पष्ट एवं जबाबदेही से युक्त हो गई है। अब श्रमिकों को संघर्ष का रास्त नहीं अपितु प्रबंध में भागीदारी एवं रचनात्मक कार्यपद्धति का रास्ता अपनाने की ज़रूरत है।

वर्तमान परिस्थितियों पर विचार करें तो ग़रीबी, बेरोज़गारी, छँटनी, बंद, स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति, ब्याज की नीची दरें, निजीकरण एवं विनिवेश आदि की कश्मकश में श्रमिक धीरे असंगठित हो रहे हैं। इस परिस्थिति में यूनियनों की भूमिका अधिक ज़िम्मेदारी युक्त एवं महत्वपूर्ण हो गई है। श्रमिकों में ठीक समझ का निर्माण करना, उसे वास्तविकता से परिचित कराना, अपने पूर्वाग्रहों को छोड़कर आज के समय की माँग के अनुरूप व्यवहार करना यूनियनों की पहली ज़िम्मेदारी बनती है।

नौकरी एवं सामाजिक सुरक्षा की सलामती घट रही है इसी स्थिति में औद्योगिक शांति बनी रहे इसके लिए ज़रूरी है कि दोनों पक्ष अपने एप्टीट्यूड और ऐटीट्यूड में बदलाव लाये। क्योंकि सोची समझी भूमिका में शोषण का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। औद्योगिक शांति के लिए मानव संसाधन प्रबंधन विभाग की भूमिका निष्पक्ष एवं उद्योग तथा श्रमिक दोनों के हितों का ध्यान रखने वाली होनी चाहिए।

उत्पादन और उत्पादकता को ध्यान में रखकर जहाँ श्रमिकों को काम करने के ढंग में बदलाव लाने की ज़रूरत है वहीं मालिक भी ये ध्यान रखे कि "मज़दूर के हिस्से में केवल मेहनत और मालिक के हिस्से में फ़ायदा" यह नीति आज के युग में संभव नहीं

हो सकती है। नियोक्ता श्रमिकों के साथ नौकर जैसा नहीं बल्कि भागीदारी जैसा व्यवहार करें, तभी उद्योग का सर्वांगीण विकास संभव हो सकता है।

विज्ञान एवं संचार तकनीकी के विकास से आज पूरा विश्व गांव जैसा बन गया है। मशीनें मनुष्य का स्थान ले रही हैं। किंतु वही मनुष्य का विकल्प नहीं है, अतः आवश्यक हो जाता है कि श्रमिक अपना कौशल बढ़ायें, आज की युग डीसेन्ट वर्क का युग है।

श्रमिकों की मल्टी स्कील्ड एवं विजिलेंट होना आज की माँग है। बढ़ता औद्योगिक उत्पादन आज प्रगति का मापदंड है, हम कई वर्षों से उस मापदंड तक पहुंच नहीं पा रहे हैं। वस्तु की गुणवत्ता से सौदा किए बग़ैर, नए संशोधनों के साथ विविध प्रकार से उपयोगी उत्पादन आज की मांग है। जिस प्रकार बदलते समय के साथ साम्य स्थापित करना उद्योग की सलामती के लिए ज़रूरी है, ठीक उसी प्रकार यूनियनों की सलामती के लिए भी यह परिवर्तन ज़रूरी है।

जो व्यक्ति या संस्था समय की कद्र नहीं करते, समय उनकी कद्र नहीं करता। अहमदाबाद पहले भारत का मानचेस्टर कहा जाता था जिसका कारण वहां की कपड़ा मिलें थीं। ये कपड़ा मिलें मंदी का शिकार होकर बंद क्यों हुईं ? इसके कारणों की खोज करें तो आप पायेंगे कि बहुत से दूसरे उद्योग भी इसी हालत में जाने की तैयारी में हैं।

आज के युग में श्रमिक उद्योग या यूनियन यदि बने रहना चाहते हैं तो उनको समय के साथ चलना आवश्यक है। अपनी ग़लतियों को प्रामाणिक रूप से स्वीकार कर अपनी कार्य पद्धति

एवं विचारों में परिवर्तन लाते हुए अपनी भूमिका स्पष्ट करनी चाहिए।

"श्रमिक और श्रमिक संघ केवल अधिकार जानते हैं, कर्तव्य नहीं" – इस चाप को मिटाना आवश्यक है। साथ ही मालिकों के लिए भी यह ज़रूरी है कि वे श्रमिकों को सोशल पार्टनर मानें। "संघर्ष का स्थान संवाद ले" यह प्रबंधन और यूनियन दोनों की ज़रूरत है। वर्तमान में बने रहने के लिए मेहनत में कसर छोड़े बिना व्यावहारिक सोच के साथ राष्ट्र निर्माण और विकास के कार्यों में लगने की आवश्यकता है। गति के इस युग में सम्बंधता बनाये रखने के साथ ही "गो स्लो" की नीति त्यागना चाहिए एवं उत्तम प्रयत्न के द्वारा श्रेष्ठतम कार्य के प्रयास किए जाने चाहिए। हालांकि शुरुआत में कठिनाई आ सकती है किंतु निरंतर प्रयास इसे सुगम बना देंगे।

राष्ट्र विकास में यूनियन की भूमिका का महत्व है कि यूनियन को श्रमिक का मार्गदर्शक बनना चाहिए। उन्हें रचनात्मक मार्ग दिखाना चाहिए। उन्हें विघटनकारी और विनाशक रास्ते से बचाकार सहयोगात्मक मार्ग पर प्रेरित करना चाहिए। कामगारों की हित रक्षा हेतु उन्हें संगठित करना चाहिए। आंतरिक मतभेदों को दूर कर यूनियनों को एक आवाज़ के साथ संघर्ष करना चाहिए, भले ही उनके बैनर अलग अलग हो।

कोई आश्चर्य नहीं, यदि कामगार संघ एकजुट होकर श्रमिक शक्ति का परिचय नहीं देंगे तो सदस्य संख्या घटती जायेगी एवं श्रमिकों की ताक़त घटेगी। यदि अभी से समझ पूर्वक आवश्यक कदम नहीं उठाये गए तो श्रमिकों की स्थिति ख़राब होने की संभावना है एवं 'आने वाली श्रमिक पीढ़ी हमें कभी माफ़ नहीं करेगी।'

संगठनों की ख़राब होती स्थिति के संबंध में बहुत सी ख़बरें बाहर आ रही हैं। अंदरूनी खींचतान एवं व्यक्तिगत स्वार्थ पूर्ति ने कई जगहों पर मज़दूर संघों के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। ऐसे लोगों की संख्या हालांकि कम है किंतु उनके कृत्यों के दुष्परिणाम बड़ी संख्या में लोगों को भुगतने पड़ते हैं। "यदि इससे हम अभी सबक़ नहीं सीखते, तो फ़िर हम कभी भी इससे सबक़ नहीं सीख सकेंगे।" व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए चलाई जा रही यूनियनों एवं यूनियन वालों पर रोक लगाना बहुत आवश्यक है।

अंत में मैं एक उदाहरण देकर मैं अपना वक्तव्य पूरा करता हूं। एशिया के उद्योगशील और समृद्ध देशों में जापान का नाम अग्र स्थान पर है। जापान की समृद्धि के मूल में परिश्रम और ईमानदारी मुख्य है। यहां के लोग मेहनती हैं। वे परिश्रम को शारीरिक संपत्ति मानते हैं। जो परिश्रम नहीं करता, वह अस्वस्थ रहता है और समाज को कमज़ोर बनाता है ऐसी प्रत्येक जापानवासी की धारणा है।

एक बार अमेरिका की एक बड़ी कम्पनी ने जापान में अपना व्यापार शुरू किया। अमेरिका संपन्न देश है। वहां थोड़ा श्रम करके भी धन कमाया जा सकता है, परंतु जापान की परिस्थिति अलग है। अमेरिकी उद्योगपति ने अपने देश की समृद्धि के आधार पर यहां भी पांच दिन काम और दो दिन शनिवार और रविवार को अवकाश रखने का निश्चय किया।

अमेरिकी उद्योगपति का विचार था कि उनकी इस उदारता से जापान के लोग खुश होकर उनका आभार मानेंगे। परंतु एक दिन सभी कर्मचारियों ने विरोध प्रदर्शित करने के लिए नारेबाज़ी शुरू की। मैनेजर को भी पता नहीं चला कि इसका कारण क्या है ?

कर्मचारियों को बुलाया गया और कारण पूछा तो पता चला कि वे लोग दो दिन की छुट्टी का विरोध कर रहे हैं। हमें दो दिन छुट्टी नहीं चाहिए, एक ही काफ़ी है। जापानियों ने कहा कि यदि आप दो दिन की छुट्टी देंगे तो हम लोग आलसी बन जायेंगे और श्रम कम करने से बीमार पड़ेंगे, तो इसका हमारे व्यक्तिगत और राष्ट्र जीवन पर प्रभाव पड़ेगा। हमारा स्वास्थ्य बिगड़ेगा। तदुपरांत छुट्टी के कारण इधर उधर जाने से बेकार खर्च भी बढ़ेंगे। हमारा स्वास्थ्य बिगड़े और पैसा व्यर्थ जाए ऐसी छुट्टी हमें नहीं चाहिए। एक छुट्टी वापस ले लो।

अमेरिकी उद्योगपति ने जापानियों को कहा, जापान ने इतनी बड़ी प्रगति कैसे की इसका सच्चा रहस्य मुझे आज जानने को मिला।

सच में परिश्रम और पुरुषार्थ ही समृद्धि की असली चाबी है। आप लोग कभी भी बीमार और निर्धन नहीं रहोगे। अपने भारतवासी छुट्टी कब आयेगी इसका इंतज़ार करते रहते हैं। जापान जैसी समझ सबमें आ जाये, तो भारत सबमें आगे रह सकता है, इसमें कोई शंका नहीं।

आज की परिस्थिति और आह्वान में ऊपर के उदाहरणों को भारतीय मज़दूर संघ के कार्यकर्ता सही अर्थ में अपने जीवन में उतारे, तो हमारी प्रगति कोई रोक नहीं सकेगा।

-हसु भाई दवे
राष्ट्रीय अध्यक्ष

वन्दनीय भारत

हे जन्म भूमि भारत, हे कर्म भूमि भारत।
हे वन्दनीय भारत, अभिनन्दनीय भारत।।
जीवन सुमन चढ़ाकर, अराधना करेंगे।
तेरी जन्म जन्म भर, हम वन्दना करेंगे।।
हम अर्चना करेंगे, हे वन्दनीय भारत.....

महिमा महान तू है, गौरव निधान तू है।
तू प्राण है हमारी, जननी समान तू है।।
तेरे लिए जिएंगे, तेरे लिए मरेंगे।
तेरे लिए जन्म भर, हम साधना करेंगे।।
हम अर्चना करेंगे, हे वन्दनीय भारत.....

जिस का मुकुट हिमालय, जग जगमगा रहा है।
सागर जिसे रत्न की, अंजुलि चढ़ा रहा है।।
यह देश है हमारा, ललकार कर कहेंगे।
इस देश के बिना हम, जीवित नहीं रहेंगे।।
हम अर्चना करेंगे, हे वन्दनीय भारत.....

शाश्वत स्वतंत्रता का, जो दीप जल रहा है।
आलोक का पथिक जो, अविराम चल रहा है।।
विश्वास है कि पल भर, रुकने उसे न देगें।
इस दीप शिखा को, ज्योतिर्मय सदा रखेंगे।।
हम अर्चना करेंगे, हे वन्दनीय भारत.....

यह श्रमिकों की धरती है

यह श्रमिकों की धरती है, यहां नीति है, संस्कृति है।
यह सेतु–हिमाचल वसुधा, प्रिय भारत मां अपनी है।।

मेहनत से हम दुनिया में, उन्नति की ओर चले हैं।
चरणों में निज जननी के, अब जीवन पुष्प चढ़े हैं।।
अब संभव नहीं है रूकना, दिन बीत गया झुकने का।
बने हैं मन में ठानी, अब साथ–साथ चलने का।।

कण–कण भी इस मिट्टी के, हर बूंद बूंद सरिता के।
सदियों से हमें सुनाते, यहां बीज मानवता के।।
हम देश द्रोह नहीं जाने, विग्रह की नीति नहीं मानें।
हम कामगार भारत के, बस देश प्रेम पहचानें।।

गुरुद्वारों या मन्दिर में, मस्जिद या गिरजाघर में।
ईश्वर से मांग रहे हैं, सुख शांति संसारों में।।
हम पूजक हैं शक्ति के, संहारक दानवता के।
जो हम से टकरा जाता, हो जाते टुकड़े उसके।।

हम निर्माता बेरूल के, अजन्ता व ताजमहल के।
सांची के स्तूप बताते, वैभव दिन जगजननी के।।
चट्टानों को तोड़ा है, पर्वत को भी फोड़ा है।
सागर के तूफानों को, इन हाथों से मोड़ा है।।

दर्श विश्वकर्मा हैं, उन राहों पर चलना है।
मजदूर संघ भारत का अब शक्तिशाली करना है।।
दिन दूर नहीं वैभव के, गर राह चलें सब मिलके।
कह दो पुकार कर सारे, हम सुपुत्र भारत मां के।।

मुद्रण : बाल भारती, 9811613086